श्रीनिवास बालभारती

यामुनाचार्य

हिन्दी अनुवाद

डॉ. नारायण राथोड़

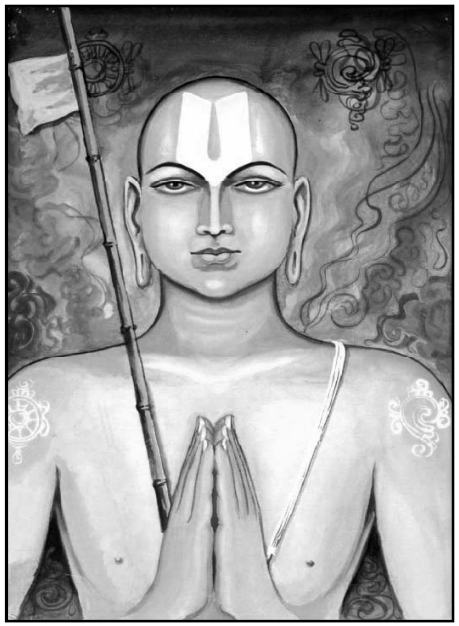

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 182

यामुनाचार्य

तेलुगु मूल

डॉ. एम. नरसिंहाचार्य

हिन्दी अनुवाद

डॉ. नारायण राथोड़

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति
2015

Srinivasa Bala Bharati - 182
(Children Series)

YAMUNACHARYA

Telugu Version
Dr. M. Narasimhacharya

Hindi Translation
Dr. Narayana Rathod

T.T.D. Religious Publications Series No. 1130
©All Rights Reserved

First Edition - 2015

Copies : 5000

Price :

Published by
Dr. D. SAMBASIVA RAO, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P:
Office of the Editor-in-Chief
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati.

दो शब्द

बच्चों का हृदय सुमनों की भांति निर्मल होता है। उत्तम कपूर से बढ़कर सुवासित उन के दिलों में बढिया संस्कार पैदा करना है। यदि उन में हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिरकाल तक आदर्श जीवन बिताने के लिए सुस्थिर नींव पड जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं। इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए हमारी विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बडों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से 'श्रीनिवास बालभारती' का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य के बच्चों तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे तथा परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

'श्रीनिवास बालभारती' की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सब को उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य अभिनंदनीय हैं।

इस प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् के प्रचुरण विभाग ने डॉ.एस.बी. रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्देश्य यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फलस्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

एडिटर-इन-चीफ
ति.ति.देवस्थानम्

स्वागत

श्रीनिवासदयोद्भूता बालानां स्फूर्तिदायिनी ।
भारती जयताल्लोके भारतीयगुणोज्ज्वला ।।

जब खण्डान्तरों में सभ्यता की बू तक नहीं थी तब भरतवर्ष अपनी सभ्यता, संस्कार,धर्म, नैतिकाचरण के लिए प्रसिद्ध हो गया था। जो इस पुण्य-भूमि पर जन्मता है वह धर्माचरण में स्थिर होकर अधर्म का सामना करता है और क्रमशः ईश्वराभिमुखी होकर यशोवान होता है। ऐसे महात्माओं के प्रभाव से हमारे जीवन इह-पर दोनों प्रकार लाभान्वित होते हैं। उनके आदर्शमय जीवनों से स्फूर्ति पाता है और समझता है कि मैं इस महान भारत का वारिस हूँ; परंपरागत इस संप्रदाय की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। ऐसी भावना से वह अपने देश की सेवा के लिए तैयार रहता है।

वास्तव में इस देश में कई धर्मात्मा, वीरपुरुष, वीरनारियाँ पैदा हुई उन्होंने संस्कृति की दृढ नींव डाली है। हमारा भाग्य यही है कि हमारी पैतृक-संपदा के रूप में उज्वल इतिहास की परंपरा है। उनके आदर्शों के पालन करने से ही कोई विद्यावान-विज्ञानी बन सकता है। राष्ट्र के जीवन प्रवाह में वही विज्ञान अचल रहकर जीवन को सुशोभित करता रहता है। इसी सिलासले को आगे बढाने के लिए महात्माओं के जीवनियों को संक्षिप्त रूप में आपके सामने रखता हूँ।

हे भारत के भाग्यदाता बालक-आइए-स्फूर्ति पाइए

एस.बी. रघुनाथाचार्य
प्रधान संपादक

परिचय

''मेरा एक पोता जन्म लेनेवाला है। वह सामान्य नहीं है। असामान्य जैसा बुद्धिमान महान पुरुष होगा। उनके शासन में श्रीवैष्णव धर्म फल-फूलकर विकसित होगा'', इस प्रकार एक दादाजी भविष्य में जो होने वाला है उसे पहले ही सोच लेता है। और बहुत लंबे समय के बाद उस बालक का जन्म होता है। इस फूल का जन्म होते ही परिमलित होना स्वाभाविक है। छोटी उम्र में ही कई शास्त्र को प्राप्तकर, राज्य के पण्डितों से टक्कर लेकर अर्ध राज्य संपन्न किया।

जिस बालक के दूध के दांत भी नहीं गिरे हैं ऐसा लडका क्या है? राज्य पण्डितों के साथ हाला मचाने के लिए उतरना क्या है? पण्डितों को हरा कर अर्ध राज्य का अधिपति होना क्या है? इस प्रकार कहीं होता है? हमारे चरित्र में ऐसा कोई कारण जन्मी हुआ है। ''आलवंदर'' जैसा सभी के मनन - चिंतन को प्राप्त करनेवाला वह बालक कोई नहीं है बल्कि नाथमुनि का पोता है। विशिष्टाद्वैत के प्रचार करनेवाला भगवद्रामानुज के परम गुरु माने जाने वाले यामुनाचार्य। हर विद्यार्थी को विद्यार्थी दशा में उनका मार्गदर्शन लेना चाहिए आगे पढिये।

- प्रधान संपादक

यामुनाचार्य

आपने प्रवचनों के माध्यम से, रचनाओं के माध्यम से, जीवन पद्धति के लिए अपना उद्धार ही नहीं बल्कि साधारण जनों का भी उद्धार करने वाले अच्छे धर्म प्रवक्ताओं, आचार्यों का हमारे देश में जन्म हुआ है। उनमें शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य प्रमुख हैं। इनके द्वारा जागृत किये गये धर्मों में लगातार अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैत ऐसे तीन नाम हैं। हर धर्म का आचार्य अपनी आध्यात्मिकता के अनुभव की नींव डालकर, उस युग में देश की परिस्थितियों को, लोगों के अनुभव शक्ति को दृष्टि में रखकर तत्व को पढाते आ रहे हैं। ''विशिष्टाद्वैत'' जैसे संप्रदाय को बहुत प्रचार में लानेवाले श्री रामानुज को अनेक प्रकार के मार्गदर्शन देनेवाला (अतः गुरुओं के गुरु) ऐसा एक महात्मा था, उनका नाम ही है ''यामुनाचार्य।''

जीवन परिचय

यामुनाचार्य जी का जन्म ई.सं. 918 वें वर्ष में तमिलनाडु में ''दक्षिणार्काटु'' जिले के ''काट्टुमन्नारकोइल'' नामक गाँव में हुआ था। उसी गाँव को ''वीरनारायणपुरम्'' भी कहा जाता है। यामुनाचार्य के पिता का नाम ईश्वरमुनि, दादाजी का नाम नाथमुनि था। नाथमुनि बड़े पण्डित, योगीश्वर और अच्छे रचनाकार भी, इसके अतिरिक्त विष्णु के बडे भक्त भी थे। यामुनाचार्य का जन्म होने से पहले उनके माता-पिता उत्तर प्रदेश की यात्रा पर गये थे। सभी पुण्य क्षेत्रों को देखते हुए, श्रीकृष्ण का निवास स्थान के नाम से जो प्रसिद्ध था उसी मथुरा नगरी में पहुँचे। उस समय एक दिन भगवान ईश्वरमुनि के स्वप्न में प्रत्यक्ष होकर कहा ''तुम्हें एक लडका होनेवाला है'' इस प्रकार कहकर गायब

हो गये। उसके बाद कुछ ही दिनों में यामुनाचार्य का जन्म होता है। श्रीकृष्ण की कृपा से जन्में उस बच्चा को ''यमुनैत्तुरैवन'' कहकर तमिल भाषा में नामकरण किया। इसका अर्थ यामुनाचार्य नदी का अधिपति होता है। इसे संस्कृत भाषा में ''यामुनाचार्य'' और तेलुगु में ''यामुनुडु'' कहा जाता है। श्री महाविष्णु के सहस्रनामों में ''सुयामुन'' कहा जानेवाला नाम श्रीविष्णु का पर्यायपद है ऐसा हमने सुना है।

मेरा पोता महापुरुष बनेगा

उन्हें एक महान पुरुष के रूप में पोता जन्म लेगा। उन्हीं की ओर से श्रीवैष्णव धर्म की बहुत ही वृद्धि होगी, ऐसा नाथमुनि को पहले ही पता था। वह त्रिकाल का ज्ञानी योगीश्वर था ना? लेकिन भगवत इच्छा को पार करना किससे साध्य होगा? अपने पोता को आँखों से देखने का किसमत नहीं रहा। पोता के जन्म से पहले ही नाथमुनि का स्वर्गवास हो गया। लेकिन, मरने के पहले उनके अपने शिष्य ''पुण्डरीकाक्षा'' (तमिल भाषा में ''उय्यक्कोण्डार'' कहते हैं) को बुलवाकर, इस प्रकार कहते हैं ''बेटा मेरा मरने का समय आ गया है। मेरे मरने के बाद कुछ ही समय में पोता जन्मेगा। उसे श्रीवैष्णव संप्रदाय को पढाकर, अपने धर्म का उद्धार करने की जिम्मेदारी तुझ पर छोड रहा हूँ।''

भाग्य का खेल

इस प्रकार कहते हुए, नाथमुनि का स्वर्गवास हो जाता है। गुरूजी की आज्ञा का पालन करने के लिए ही होड के साथ पुण्डरीकाक्ष जी समय काट रहा था। बेचारा, उसे भी नाथमुनि के पोते को देखना, श्री वैष्णव सांप्रदाय को पढाने का सौभाग्य नहीं रहा। उनका भी स्वर्गवास हो जाता है। स्वर्गवास के पहले वे, उनका अपना शिष्य जो था श्री राममिश्र उसे, बुलवाकर इस प्रकार कहता है ''बेटा! देखो भाग्य का

खेल हमारे गुरू श्रीनाथमुनिजी मुझे पोता जन्मेगा कहकर, उसकी ओर से अपने श्रीवैष्णव धर्म की वृद्धि होगी, कहकर सपना देखते हुए स्वर्गवास हो गये। जन्म लेनेवाले उस पोते को विद्या और वृद्धि के साथ मतोद्धरण के लिए आवश्यक प्रशिक्षण देने के लिए मुझे आदेश दिये थे। लेकिन मेरी मृत्यु होने वाली है। आगे नाथमुनि के पोता के जन्म से लेकर बड़े होने तक उसकी देख-भाल, प्रयोजक बनाकर श्रीवैष्णव धर्म प्रतिष्ठा का प्रचार करने का बोझ तुम पर छोड रहा हूँ।'' इस प्रकार पुण्डरीकाक्ष का जीवन समाप्त हो जाता है।

इस प्रकार यामुनाचार्यजी का जन्म एक विचित्र - सी घटना मानी जाती है। श्रीराम मिश्र के किसमत से, श्रीवैष्णव धर्म के प्रचार के लिए आधार माने जानेवाले यामुनाचार्य शुभ समय पर अवतरित होते हैं।

बचपन

फूल पैदा होते ही परिमलित होता है। यामुनाचार्य जी बचपन से ही अद्भुत सी बुद्धि का प्रदर्शन करता था। कोई भी विषय क्यों न हो एक बार सुनने पर काफी होता था। जो विषय जिस प्रकार है उसी प्रकार ग्रहण कर लेते थे। इसके साथ-साथ अपनी पिता और दादाजी की अचंचल सी धैर्य शक्ति को भी जन्म से ही प्राप्त किया था। बडे मुश्किल से कई दिनों बाद जन्म हुए वंशज को देखकर माता-पिता आनन्द में डूब जाते हैं।

पिता का स्वर्गवास

यामुनाचार्यजी पांच वर्ष के होते ही उनके पिता ईश्वरमुनि - शास्त्रोक्त जैसा उपनयन करके वेदों का अध्ययन करवाया था। धीरे-धीरे वेदों के अंगों, स्मृतियों, न्याय मीमांसा आदि शास्त्रों, काव्य

नाटकालंकारों की प्रक्रियाओं को आसानी से संपन्न करने की आदत सी हो गयी थी। इतना ही नहीं बल्कि इसके साथ अत्यद्भुत-सा कवित्व को भी प्राप्त किया था। लेकिन दुर्भाग्यवश पिता ईश्वरमुनि बीमार होकर स्वर्गवासी हो गये। छोटी-सी उम्र में ही पिता के प्रेम से वियोग हुये यामुनाचार्य को अपनी माताजी कुछ कम नहीं होने देती।

गुरुकुल वास

यामुनाचार्य जी अपने गाँव को छोडकर, समस्त विद्या का निवास कहलाने वाला कांची नगर को आकर, व्याकरण शास्त्र का अध्ययन करने के उद्देश्य से ''महाभाष्यभट्टु'' नामक बडे विद्वान के पास ''गुरुकुलवास'' किया। एक बार एक घटना घटती है। उसी घटना ने यामुनाचार्य के जीवन को ही बदल दिया था ऐसा कहा जा सकता है।

कर की बाकी दे दीजिए

उन दिनों में कांची नगर राजधानी में चोलदेश के एक राजा शासन कर रहा था। उनके स्थान पर ''आक्कियाल्वान'' (संस्कृत में ''विद्वज्जनकोलाहल'' कहते हैं) जैसा पण्डित था। राजाओं के शरणागत के गर्व (घमण्ड) से वे देश के पण्डित कहे जाने वाले हर लोगों से ''कर'' वसूल करते थे। यह अन्याय है इस प्रकार पता होने पर भी, उनके सामने कोई भी जबान नहीं हिलाते थे। (उनका विरोध करने के लिए कोई भी धैर्य नहीं करता था।)

इस घटना के बाद एक दिन, यामुनाचार्यजी के जो गुरु थे ''महाभाष्यभट्टु'' के घर नुकड पर बैठकर पाठ पढ़ाते समय, बाकी दीजिए कहकर राजदरबारी के कुछ लोग चिल्लाने लगते हैं। उस समय गुरुजी घर पर नहीं थे। वास्तव में तब तक, सारे पण्डित लोग

राजपण्डित को कर देना है कहकर, या अपने गुरुजी की कर की बाकी का विषय यामुनाचार्य को पता ही नहीं था। इस प्रकार राजभट्टों का आकर झगडा करना यामुनाचार्यजी को सहन नहीं हुआ। आखिर मजबूर होकर धैर्य से इस प्रकार कहता है।

चिडिया छोटी, पुकार बडी

''हमारे गुरु जी महान पण्डित हैं। वे किसी सामान्य पण्डित को कर क्यों देंगे? यह अन्याय है। हमारे गुरुजी किसी प्रकार की रकम नहीं देंगे। जाओ।''

अब तक राजपंडित की आज्ञा का सामना करनेवाले वे भट देखते नहीं रहेंगे। यामुनाचार्यजी की बातों पर निर्लक्ष्य से इस प्रकार विरोध में कहते हैं कि ''ओं हों! चिडियाँ छोटी, पुकार बड़ी कहे जैसा ही है आपका व्यवहार! एक आपके गुरुजी की ही बात क्या? देश के हर पण्डित को हमारे राज पण्डित जी को कर बान्धना ही होगा। इसे मना करेंगे तो राज दण्ड नहीं चुकेगा। राजपण्डित का अपमान करेंगे तो राजा का अपमान करने जैसा होगा। यह तो क्षमा न किये जानेवाला दोष होगा। तुम अभी बच्चे हो, कौवे के बच्चों को क्या समझेगा मिट्टी की गोली का मार।'' इस प्रकार...

ये ताड पत्र राजपण्डित को दे दो!

इसे सुनकर बाल यामुनाचार्य को पौरुष पैदा होता है, तुरंत ही उसके उत्तर में कहता है कि ''मुझे इतना आसान समझकर न फेंकना। फिर भी आपसे मुझे क्यों ये विवाद? ये लीजिए ताडपत्र, ले जाकर अपने पण्डित को दीजिए।'' इस प्रकार कहते हैं। एक ताड पत्र पर श्लोक लिखकर देता है तब उन्होंने कहा ''ठीक! इधर दीजिए'' कहकर

आपस में बतियाते हुए उस ताड पत्र को ले जाकर राज सभा में उपस्थित आक्कियाल्वान को देते हैं। जो भी हुआ उस विषयों को स्पष्ट रूप से बताते हैं। इतना छोटा-सा लडका अपने गुरूजी के पक्ष में इस प्रकार हमारे साथ विवाद करना हास्यास्पद सा लगा उनको।

कितना धैर्य है उसे

नासमझ उम्र में कुछ हुआ होगा। उस बालक से हमारा कुछ लेन देन नहीं है। ऐसा समझकर धीरे से उस ताड पत्र को खोलता है जो कि हाल ही में राजभट्ट द्वारा दिया गया था। उस पत्र में लिखे गये दो श्लोकों को पढ़ते ही तुरंत उनका मुँह उतर जाता है। आँखे लाल हो जाती हैं। इस प्रकार एक तरफ गुस्सा तो, दूसरी तरफ आश्चर्य में डूब जाते हैं। ''आह! कितनी अच्छी कविताएँ हैं! कितना धैर्य है उस लडके को!'' इस प्रकार समझता है।

वास्तव में उसे गुस्से में लाकर आश्चर्य करने वाले श्लोक इस प्रकार है।

पाण्डित्य से सवाल

उस ताड के पत्र पर लिखा हुआ पहला श्लोक इस प्रकार है -

न वयं कवयस्तु केवलं
न वयं केवल तंत्रपारगाः ।
अपि तु प्रतिवादि वारण
प्रकटाटोपविपाट नक्षमा ।।

इसका भाव इस प्रकार है - मैं केवल कवि ही नहीं हूँ; केवल पण्डित भी नहीं हूँ इतना ही नहीं वादों में सामने आनेवालों के (कोम) सिंग झुकाने में भी पक्का हूँ।''

द्वितीय श्लोक इस प्रकार है

आशैलादद्रिकन्याचरणकिसलय न्यासधन्योपकंठाद्
आरक्षोनीत सीतामुखकमलसमुल्लास हेतोश्च सेतोः।

आ च प्राच्य प्रतीच्यक्षितिधर युगलादर्क चंद्रावतंसा
न्मीमांसाशास्त्रयुग्म श्रमविमलमना मृग्यतां मादृशोऽन्यः।।

इसका भाव इस प्रकार है - उस ओर उत्तर से लेकर दक्षिण तक (अतः रामेश्वर तक), पश्चिम से लेकर इधर पडमटि पहाडों तक इस विशाल भारत में, पूर्वमीमांसा, उत्तर मीमांसा (ब्रह्मसूत्र = वेदांत) कहे जानेवाले दोनों शास्त्रों में मेरे जैसा कोई पण्डित है तो ढूँढकर लाओ देखेंगे।

(अतः मेरे समान कोई पण्डित ही नहीं है तो, मुझ से बढकर वह कौन हो सकता है।)

उस बच्चे को बुला लाओ

इस श्लोक को संपूर्ण समझने के बाद राजपण्डित अहंकार, व आग्रह की अवधि को पार करने लगते हैं। राजा को इस विषय के बारे में विस्तार से बताते हुए, वह पण्डित राजभट्ट से इस प्रकार कहता है कि ''तुम तुरंत ही उस बच्चे को यहाँ ले आवो यदि आने के लिए तैयार न हो तो खींचकर (घसीट कर) ले आना।''

इज्ज़त देकर ही इज्ज़त लेना है

राजभट्टों को फिर से यामुनाचार्य के पास आना पडता है इस विवाद का समाचार सुनकर उस जगह पर बहुत ही लोग जमा हो जाते हैं। यामुनाचार्य का गुरूजी घर आकर, जो कुछ हुआ हो पता लगाकर, उससे इस प्रकार कहता है ''बेटा तुझसे ये विवाद क्यों हुआ? राज पण्डितों से शत्रुत्व हमारे लिए अच्छा नहीं है। उस पण्डित का कर्ज मैं कुछ भी करके चुका दूँगा। अनावश्यक तुम्हें इस झंझट में नहीं पडना है। मेरी बात सुन।'' यामुनचार्यजी अपने गुरूजी का दर्शन लेते हुए कहा कि

''आदरणीय गुरुजी! आप मेरे पिता के समान हैं। क्या आपका कष्ट मेरा कष्ट नहीं होता? आप महाविद्वान होकर भी उस सामान्य से पण्डित का 'कर' बांधना कुछ न्याय है? यह सब कुछ देखते मैं, सहन नहीं कर पाऊँगा। ऐसा नियम बनाने वाला राजा भी क्या राजा है!'' कहा उसने।

इस बीच में राजभट्ट यामुनाचार्य के पास आकर यामुनाचार्यजी से ''आओ भाई समय हो गया है! हमारे पण्डितजी तुम्हें तुरंत ही बुलवाकर लाने के लिए कहा है। न आने पर, घसीट कर लाने के लिए कहा है।'' इस प्रकार कहते हुए बाल पकडकर खींचने लगते हैं।

इन लोगों के व्यवहार को देखकर यामुनाचार्य को गुस्सा आता है, उनकी आँखें लाल हो जाती हैं। वह गुस्से में इस प्रकार चिल्लाते हुए कहता है कि ''वहीं रुको! क्या है? तुम्हारे पण्डित को, तुमको, इज्ज़त देना शायद मालूम नहीं है। इज्ज़त देकर लेना है। मुझे जिस प्रकार चाहिए उस प्रकार आह्वान करेंगे तो आने के लिए कोई आपत्ति नहीं है। जाकर कहो।''

यामुनाचार्य के मुख तेजस्व, बातों में गंभीरता देखकर सभी भट्ट चकित हो जाते हैं। ''चित्तं'' जैसा कहते हुए वे अपने पण्डित को यामुनाचार्य की सारी बातें सुनाते हैं।

दरबारी इज्ज़त से आह्वान

ये बातें सुनकर पण्डित सचमुच बाल यामुनाचार्य से झगडा लेकर विजय पाने की दिशा में सोचते हैं। ''इतना छोटा सा बालक, उसकी इतनी हिम्मत है!'' कहकर राजा भी आश्चर्य होता है। उस बच्चे को ठीक तरह इज्ज़त देकर सभा में बुलवाइए। उसे निश्चित देखना है। ऐसा रानी बल देकर कहती है। ठीक है, समस्त दरबारियों को इज्ज़त के साथ, आह्वान के लिए भेजता है राजा।

राज दंपतियों के बीच प्रतियोगिता

''कुछ तो भी छोटेपन का कडासा! आज अपने राज दरबारी पण्डितों के साथ उस छोटे को वाक्यार्थ की तैयारी करने लगवा देंगे। इसमें अपने पण्डितों की ही जीत होगी। ऐसा समझने में कोई संदेह नहीं होगा।'' इस प्रकार राजा अपनी रानी से कहता है।

''आप के सोचने से थोडायी ऐसा होगा? मुझे तो ऐसा लगता है कि इस विवाद में (प्रतियोगिता) उस बच्चे की ही जीत होगी।'' इस प्रकार कहती है रानी।

''ठीक है। किसी एक निर्णय पर आयेंगे। आज के वाग्वाद में वो बच्चा जीतेगा तो, मैं उसे आधा राज्य सौंपकर उसका आदर करुँगा।'' इस प्रकार की प्रतिज्ञा करते हैं राजा।

''उसी बात पर टिके रहना। यदि अपने राजदरबारी पण्डितों की जीत होगी तब मैं इस गाँव के लोगों को स्वयं भोजन पकाकर परोसूंगी।'' इस प्रकार रानी प्रतिज्ञा करती है।

इस प्रकार उन दिनों में यामुनाचार्य और राजपण्डितों के बीच का वाद विशिष्ट आकर्षण हुआ था।

किस बिल में कौन सा सांप होगा!

इस बीच राज्य की सारी मर्यादाओं को स्वीकार करते हुए पालकी से नीचे उतरते हैं यमुनाचार्यजी। वहाँ पर उपस्थित सभी लोगों की आँखे उन्हीं की ओर थी। सुंदर-सा मुख, विशाल-सी आँखें, यज्ञोपवीत, पंचशिख, माथे पर लगाया गया तिलक उसे देखते ही राजा, रानी, और राजपण्डित भी एक साथ ही आश्चर्य से पुलकित हो उठते हैं। ''इसमें कुछ-न-कुछ विशेष प्रतिभा है'' इस प्रकार समझते हैं राजा।

रानी का आनन्द वर्णन के अतीत था। ''कितनी छोटी उम्र के है और कितना वर्चस्व! इस वाग्वाद में विजयी प्राप्त करके मेरी प्रतिज्ञा को साकार करेगा।'' ऐसा दृढ विश्वास था उसे।

तभी राजपण्डित का दिल धडकना आरंभ होता है ''क्या होगा? किस बिल में कौन सा सांप होगा? ये तो उद्धंडपिण्ड जैसा है। आज की सभा में मेरी इज्ज़त रखेगे तो बस है।'' इस प्रकार, वे अपने मन ही मन में हज़ारों देवताओं की प्रार्थना करते हैं।

यामुनाचार्य की विजय

उन दिनों में होने वाली प्रतियोगिताओं के बारे में सभी लोगों को पता था। अडोस-पडोस के घरों से भी लोग, पण्डित, गंवार, छोटी बच्चियाँ, स्त्री, पुरुष सभी बड़ी संख्या में इस अद्भुत को देखने के लिए आनेवालों की भीड टूट पडती है। चाहे किसी के भी जबान से सुनों एक हीं बात ''कौन है, अभी १० वर्ष भी नहीं हुए होंगे इस लडके को राजदरबारी पण्डित के साथ शास्त्र की चर्चा करेगा कह रहा है।'' ऐसी बाते सुनने में आ रही है। राजा के दरबार में लोग रेत डालेंगे तो पत्थर डालने के समान होगा।

ठीक निर्णीत समय पर राजपण्डित और यामुनाचार्य के बीच शास्त्र की चर्चा आरंभ होती है। उन दिनों में, प्रतियोगिता में बालक यामुनाचार्य बाल भास्कर जैसा प्रशस्थ हुए थे। ऐसा कौन-सा कर्म होगा पता नहीं लेकिन राज दरबारी पण्डित, यामुनाचार्य द्वारा पूछे गये प्रश्नों में से एक का भी उत्तर नहीं दे पाया। कम-से-कम उनकी जबान भी नहीं हिल सकी। पागल के समान व्यवहार करने लगा। इतना लंबा जीवन जीकर भी अंत में इस छोटे से बच्चे के साथ पराजित हो गया।'' ऐसा अपमान

लगा उसे। कुछ न कर पाने पर, भरी सभा में अपनी हार को स्वीकार कर लेता है। आगे और क्या होगा! वही सभा के सभी लोग एक कंठ के साथ यामुनाचार्य की जय जय की, जो कि करतार ध्वनियों से भी बढकर थी।

आगे पण्डित को कप्प देने की आवश्यकता नहीं होगी - विजय जिसकी हुई थी (यामुनाचार्यजी) राजदरबारी पण्डित का घमण्डवाले कप्प को छीन लेता है। जिसके कारण राजपण्डित घमण्ड में चूर-चूर हो रहा था उसे हटाया गया। जब तक कि ''हर पण्डित राज दरबारी पण्डित को कर देंगे'' इस प्रकार का जो नियम था उसे रद्द करवाकर, देश में रहनेवाले सभी पण्डितों को आनन्द पहुँचाया। ''सुखी जीवन से सौ साल जियो बेटा।'' इस प्रकार कहते हुए हर विद्वान बालक यामुनाचार्य को आशीर्वाद देते हैं।

एन्नै आलवंदारों

रानीजी की जीत हुई। वह आनन्द से दौडती आकर बालक यामुनाचार्य को उठाकर मुक्का लेती है। ''एन्नै आलवंदारों'' कहती है। ''अतः मेरी रक्षा के लिए आये हो!'' ऐसा ये तमिल का वाक्य है। उस दिन से यामुनाचार्य को ''आलवंदार'' नाम आया।

उन दिनों में यामुनाचार्य राजा बने

आगे अपने वचनानुसार राजा बडे आनन्द के साथ अपना अर्ध राज्य यामुनाचार्यजी को भेंट देता है और क्या! छोटा-सा यामुनाचार्य कम समय में ही राजा बन जाता है। किसी की पकड में न आने वाला बडा व्यक्ति हो जाता है। यामुनाचार्य को जब कोई देखने जाते तो, घंटों तक प्रतीक्षा करते रह जाते। धीरे-धीरे यामुनाचार्य युवक बन जाते हैं।

राजभोग के साथ, राजनैतिक व्यवहारों से व्यस्त रहने लगे। उनके पास कुछ करने लिए समय नहीं बचा। ''वास्तव में मैं क्यों न हूँ? मेरा जीवन लक्ष्य क्या है? आदि विचार उन्हें डाँवडोल कर रहे थे। विवाह के उपरांत बच्चों का भी जन्म होता है।''

आलस्यं अमृतं विषम्

यामुनाचार्य के दादाजी जो नाथमुनि थे उसका शिष्य श्रीराम मिश्र के बारे में पहले ही बताया गया है। सही समय आने के बाद यामुनाचार्य को श्रीवैष्णव संप्रदाय के रहस्य को पढाकर, मतोद्धार करवाने के संकल्प से वे जीवित रहे। यामुनाचार्य की छोटी उम्र में ही राज्य का भारी बोझ आने से, श्रीराम मिश्र एक तरफ आनन्द और दूसरी तरफ दुःखी था। अपने परम गुरूजी का पोता अखण्ड प्रतिभावान होकर, नाम और प्रतिष्ठा, संपन्न किया है ना! जैसे आनन्द से भी ''अरे! राज्य के कार्यों में सिर खपाकर अपने धर्म का उपयोग शायद नहीं आ पायेंगे'' जैसा विषाद भी उनके मन में अधिक हो रहा था। ''ठीक है अभी देर करेंगे तो अमृत विष भी हो सकता है। तुरंत ही यामुनाचार्य को मिलकर उसके कर्तव्य को याद कराना है। गुरूजी के सपनों को साकार करना होगा!'' इस निश्चय से, कई आशाओं से, वे यामुनाचार्य के दरबारी मण्डप के द्वार पर जाते हैं।

अगले हफ्ते में मिलने के लिए कहना

यामुनाचार्य को स्वयं ही समाचार भेजता है। ''राममिश्र कहे जाने वाला मैं वृद्ध वैष्णव, कुछ मुख्य काम से मिलने के लिए आया था।'' इस प्रकार -

द्वारपालक कुछ देर बाद वापस आकर इस प्रकार कहता है कि ''राजा अभी व्यस्त हैं। अगले हफ्ते को मिलिए'' कहकर चले जाते हैं।

(लौट जाते है) ''ठीक है! राजा से मिलना इतना आसान नहीं होगा, और प्रयत्न करेंगे।'' इस प्रकार समझकर राममिश्र वापस लौट जाता है। उसके बाद अगले हफ्ते वे पुनः आकर राजा को समाचार पहुँचाते हैं। इस बार भी उसी प्रकार समाधान मिलता है इसलिए जिद्द से कब बुलावायें तब जाते ही रहे। राजा कल, परसों कहते हुए बार-बार वापस भेजते रहे। अंत में राममिश्र थक जाता है।

''ये क्या परीक्षा है भगवान! हीरे के टुकडे के समान ये बच्चा अपने संप्रदाय को अपनाने का छेड दे रहा है! इस राज्य भोग में चिपककर बाहर निकलना बहुत ही कष्टदायक है। यदि एक बार भी मैं उसे मिल लूँ तो बहुत धन्य होगा। उसके मार्ग को मोड दिलाने का विश्वास मुझे है। लेकिन इसलिए भी कोई मौका नहीं मिल रहा है। इस प्रकार कहते हुए वह उसी भ्रम में रह जाता है।

अन्यथा शरणं नास्ति

अंततः वह श्रीरंगनायक को मन में प्रार्थना करते हुए ''आपद्बांधवा! तुम्हीं कोई मार्ग बताओ। मैं अपने गुरूजी को, और मेरे गुरूजी उनके गुरूजी को, (नाथमुनि को) दिये गये वचनों को संपन्न करने की जिम्मेदारी आपकी है। अन्यथा शरणं नास्ति।'' इस प्रकार की शिकायत करके अपने घर वापस लौट जाता है।

उसी दिन सुबह के समय पर उनके सपने में श्रीरंगनाथ का साक्षात्कार होता है। ''राममिश्र! घबराना नहीं। यामुनाचार्य की तुम्हें कितनी जरूरत है उतनी ही मुझे भी है। भले किसी के लिए क्यों न हो समय का सार्थक होना है! थोडा धीरज धर। राज्य भोग की रुचि लेनेवाले यामुनाचार्य के मन को एक ही बार आध्यात्मिक विषयों पर

मोड देना कष्टदायक है। वह धीरे-धीरे रास्ते पर आयेगा। तुम जिस प्रदेश में रहते हो उस प्रदेश में मुल्लमुस्ते की भाजी उगती है ना! उस का प्रयोग करके देखो।'' इस प्रकार कहा, जैसा लगा।

तुरंत ही नींद जाग गयी। श्रीराममिश्र जी बडे संतोष के साथ श्रीरंगस्वामी को धन्यवाद दिया।

इस भाजी को पकाकर परोसिये

''सच है! इतने दिन से मुझे ये उपाय सूझा नहीं। इधर चारों ओर कही भी देखों मुल्लमुस्ते की भाजी कब बढेगी। इसे ले जाकर प्रतिनित्य यामुनाचार्य के भोजन में एक व्यंजन बन सके ऐसा देखना है।'' उस भाजी को काट कर लाने के लिए उसी समय जाते है श्रीराम मिश्र।

''मुल्लमुस्ते'' ये एक भाजी का नाम है। तमिल भाषा में इसे ''तूदुवलै'' कहते हैं। संस्कृत में ''अतर्क'' कहा जाता है। इसकी विशिष्टता यह है कि उसे लगातार कुछ दिनों तक खाने वाले को इहलोक के सुखों पर विरक्त होकर, भगवान के ऊपर दिल जाता है। श्रीराम मिश्र कुछ भाजी तोडकर ले आये और उसकी मुली बांधकर यामुनाचार्य के भवन पर गये। धीरे से राजा के रसोइया से स्नेह बढाया।

इस ''मुल्लमुस्ते'' की भाजी को अपना राजा बहुत ही पसंद करता है। ऐसा पता चला है। मैं रोज आपको लाकर दूँगा। इसे पकाकर राजा को परोसिए। इससे ज्यादा और कुछ नहीं।

उस भाजी को पकाकर रसोइया अपने राजा को परोसता है। राजा अन्य सब्जियों के साथ उसे भी ग्रहण करता है। इस प्रकार राममिश्र हर दिन ''मुल्लमुस्ते'' की भाजी ले आकर रसोइया को सौंपना रसोइया पकाकर राजा को परोसना, आदि होता था। इस प्रकार हफ्ते, महीने भी

गुजर गये। लेकिन एक दिन भी राजा रसोइया से ''ये कौन सी भाजी है?'' कहकर नहीं पूछा।

ये कहाँ की परीक्षा

राममिश्र जी एक दिन रसोइया से हिम्मत करके पूछ लेता है कि ''जी हाँ! मेरे द्वारा दी गयी भाजी के बारे में राजा को कुछ बताया नहीं?'' , ''कुछ नहीं पूछा स्वामी! राजा को एक क्षण के लिए भी समय नहीं है।'' कहता है रसोइया।

जब तक बहुत ही सहनशीलता से उस भाजी को राजा के रसोइया को देते आये राम मिश्र को, बहुत ही दुःख और निरुत्साह होता है।

''श्री रंगनाथ! ये कहाँ की परीक्षा मुझे! मेरी दिन-ब-दिन तबीयत बिगड रही है, और कब तक मैं इस प्रकार आशा से देखते रहूँ! अंत में हमेशा मेरी मेहनत निष्फल ही होगी क्या! अपने संप्रदाय के लिए काम आयेंगे ऐसा समझा था, हीरा का टुकडा जैसा लडका क्यों जब चाहे तब राज्यभोग में लगे रहता हैं।'' इस प्रकार फटाक से अपने घर वापस लौट आता है। उस बेचारे को देखते ही रसोइया को दया आती है। लेकिन क्या कर सकता अपने मन से, राजा की बिना अनुमति के, उसे बात नहीं कर सकते ऐसा नियम था।

मुझे अपने में मिला लो

अपने घर जाते ही राम मिश्र को ठण्डक का बुखार आता है। उसके बाद लगातार एक हफ्ते तक वर्षा के साथ मेघावृत होने लगा, बूंद - बूंद बारिश होने लगी। वास्तव में उसे पलंग से ऊपर उठकर खडा होना मुश्किल था। बुखार कम कर बाद में साधारण स्थिति में आने के लिए बहुत ही समय लगा था।

''श्री रंगनाथा! इसके आगे मेरा जीना व्यर्थ है। तुरंत ही मुझे अपने में मिला लो (स्वीकार कर लो)'' वह ऐसी प्रार्थना भगवान से बार-बार करता है।

वह भाजी दिख नहीं रही है?

इस प्रकार होने पर राजा भोजन ग्रहण करते हुए एक दिन रसोइया से इस प्रकार पूछता है ''स्वामी! कई दिनों से हम जिस भाजी की स्वाद ले रहे थे वो कुछ दिनों से दिखाई नहीं दे रही है। उसका क्या कारण है?'' रसोइया विनय भाव से उसका उत्तर देता है।

''लाने वाले को देखना है। पिछले छः महीनों से एक वृद्ध वैष्णव स्वामी रोज अपने दिवाण को ''मुल्लमुस्ते'' नामक भाजी देते आ रहा था। वों राजा को पसंद है ऐसा कहा करता था। उनके कहने पर मुझे पता चला। वह 15 दिनों से नहीं आ रहा है। इसीलिए उस भाजी को आपको नहीं परोसा जा रहा है।

उस भाजी को हमें ही क्यों दे रहा है? ''वास्तव में हम पर इतनी श्रद्धा के साथ उस भाजी को क्यों लाकर दे रहा है जरा उनसे पूछ लो कहता है राजा। ''नहीं प्रभु! आनेवाले को आपका एक बार दर्शन करने की इच्छा थी ऐसा मुझे लगता है'' कहा रसोइया ने। ''फिर उस विषय को एक बार भी तुम मुझे बताये नहीं? क्या कारण है?'' राजा फिर से पूछते हैं।

''प्रभु दया करो आनेवाले के पास बिना खत के स्वयं उस विषय को वापस लेने पर फिर... फिर।'' कहते हुए आँखों में आँसू भर लेते हैं रसोइया। ''ठीक है! जो हो गया सो हो गया। और एक बार स्वामी

भाजी ले आने पर मुझे किसी हाल में पता करो।'' कहते हुए यामुनाचार्य जी भोजन समाप्त करके चले जाते हैं।

''चित्तं महाप्रभू! अनिवार्य रूप से प्रार्थना करूँगा।'' कहता है रसोइया अपने हाथ जोडते हुए।

ये ही अंतिम प्रयत्न

अस्वस्थ से उठने के बाद श्री राममिश्र अंतिम प्रयत्न समझकर यामुनाचार्य को मिलने के लिए श्रीरंगनाथ को प्रार्थना कर, इस प्रकार समझते हैं।

''पिता! यही मेरा आखरी प्रयत्न है। फलप्रद हुआ तो ठीक है नहीं तो हमारे गुरूजी द्वारा देखे गये सपनें भी रात में नहीं बल्कि दिन में देखने वाले सपने हो जायेंगे। मेरी शक्ति से बाहर अभी तक यामुनाचार्य को वैष्णव संप्रदाय में मोड देने के लिए प्रयत्न किया हूँ। मेरे इस प्रयत्न को सफल करने की जिम्मेदारी आपकी है। दूध में डूबे या पानी में डूबे आपका ही भार है। रक्षा कर देवों का देव।'' कहते हुए एक पुली ''मुल्लमुस्ते'' की भाजी लेकर राजा के दिवाण में जाते हैं। भोजन के बाद रसोइया को मिलकर, इस प्रकार कहता है।

''स्वामी! ये लीजिए इस भाजी को पकाकर राजा को परोसिये। इसके आगे मेरा इस प्रकार आना नहीं होगा। मेरी उम्र हो गयी है। मेरा स्वास्थ्य हमेशा एक तरह नहीं रहता है। भगवान मुझे किसी भी क्षण बुला सकता है। ठीक है मैं चलता हूँ।

सपने साकार हुए

उसे देखते ही रसोइया को बहुत ही आनन्द हुआ। ''महोदय! आप इस बीच दिखे नहीं! आपके बारे में राजा पूछ रहे थे। आपके आने पर

किसी हाल में मिलने के लिए कहा है। एक क्षण रुकिए। संदेश भेजता हूँ।'' कहते हुए वह वृद्ध वैष्णव के आने की खबर राजा को देता है। उसे तुरंत आने के लिए राजा आदेश देता है। अब तो श्रीराम मिश्रजी के आनन्द की कोई सीमा नहीं थी। कई वर्षों का प्रयत्न साकार होगा, कहकर वह श्रीरंगनाथ स्वामी को कृतज्ञ बताते है। उनके भोजन के बाद सभा में जाकर यामुनाचार्य को देखा। श्रीराममिश्र का सपना साकार हो जाता है। ''आहाँ! कितना तेजस्वी युवक है! हमारा नाथमुनिजी का पोता, श्रीवैष्णव संप्रदाय के सिद्धांत का उद्धारक ये ही है, अपने मन ही मन में समझ लेता है।

यामुनाचार्य का कुलधन

यामुनाचार्य : स्वामी नमस्कार! ऐसी कृपा कीजिए।

श्रीराम मिश्र : ''आयुष्मान भव।''

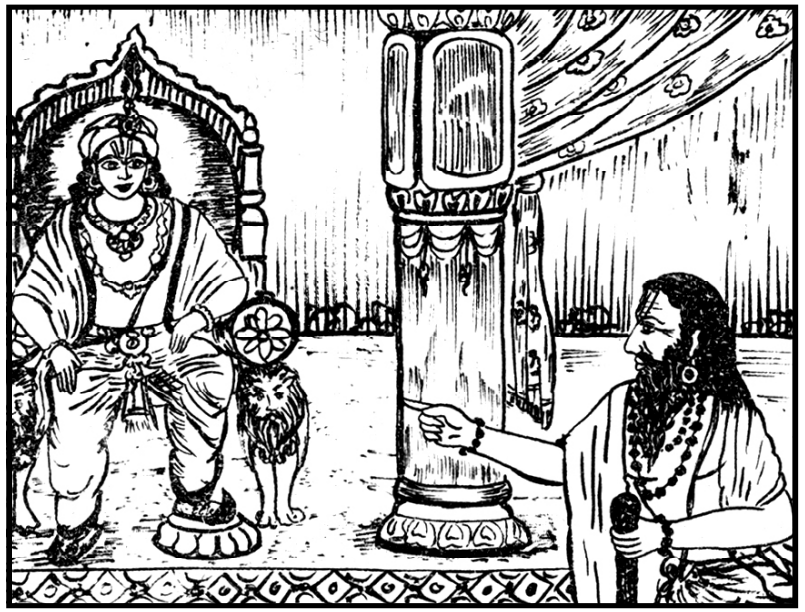

यामुनाचार्य : महोदय! आपसे कई लंबे समय से हम मिल नहीं पा रहे हैं।

श्रीराम मिश्र : क्या बात है। आपके राज्य के कार्य में बाधा हो गयी हो तो क्षमा कीजिए।

यामुनाचार्य : कई दिनों बाद आप इस बड़ी उम्र में हमारे दिवाण को ''मुल्लमुस्ते'' की भाजी को नित्य देते आ रहे हैं। इस रहस्य का पता हमें परसों ही पता चला। हमें उस भाजी पर प्रेम बढ़ने लगा। आपके श्रम का प्रतिफल आप जो भी मांगेंगे हम देने के लिए तैयार हैं। छुट्टी दीजिए।

श्रीराम मिश्र : मेरे द्वारा लायी गयी सब्जी का मूल्य! आप हमेशा उसे बड़े प्रेम से खाते रहे, इसलिए मैं आप का ऋणी हूँ।

यामुनाचार्य : लेकिन, बड़ी उम्र के आप को, हममें जो अभिमान है उसे अतिथि के लिए जिस प्रकार चाहिए था उस प्रकार की इज्जत नहीं दे पाना हमारे राज दरबार के लिए ही बेइज्जत की बात है। कृपया कुछ-न-कुछ लीजिए।

श्रीराम मिश्र : (कुछ सोचते हुए) ठीक है! आपके बन्धन को मैं कैसे मना कर सकता? एक छोटी सी बिनती है। आपके दादा-पर-दादाओं ने आपके जन्म के पहले से ही आपके साथ लगे रहने के उद्देश्य से ही बहुमूल्य जाति के धन को मुझे सौंपकर गये हैं।

अभी तक उस विषय को बताने का मौका (अवसर) ही मुझे नहीं मिला। सभी निक्षेप को आपसे कहाँ चर्चा करूँगा या नहीं समझकर भय भी था मुझमें। अभी कोई भय मुझमें नहीं रहा।

यामुनाचार्य : हाँ! इस प्रकार होगा तो आप मुझे वे निक्षेप कहाँ है बताने पर मैं अपनी सेना के साथ जा करके ले आऊँगा।

श्रीराम मिश्र : (मुस्कुराते हुए) महाराज! वह निधि इतनी सरलता से मिलने वाली नहीं है, और कुछ दिनों तक आप को प्रतीक्षा करनी होगी। सभी क्षेपों को संपन्न करने के लिए एक अर्हता की आवश्यकता है, श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन करना आप के लिए आवश्यक होगा। इसलिए आप की अनुमति हो तो मैं स्वयं ही यहाँ आकर के संग्रहीत गीतों के रहस्यों को बताऊँगा। इससे ज्यादा मेरी चाहत का प्रतिफल और कुछ नहीं है।

क्या होगा मेरा जीवन लक्ष्य

अभी तक ''मुल्लमुस्ते'' की भाजी के लंबे समय से खाते आ रहे यामुनाचार्यजी का मन प्रापंचिक भोग से विरक्त हो गया था। ''वास्तव में मेरे जीवन का लक्ष्य क्या होगा।'' इस प्रकार का प्रश्न उनके मन को प्रताडित कर रहा था। ''ठीक है! देखेंगे। धन मिल रहा है तो मना क्यों?'' इस प्रकार समझने वाले यामुनाचार्य, श्रीराम मिश्र को अपनी स्वीकृति देता है श्रीराम मिश्र को देखते हुए पता नहीं तुरंत ही यामुनाचार्य के मन में एक प्रकार की आत्मीयता रुचि होने लगती है।

मेरा कर्तव्य क्या है अभी अभी मालूम हो रहा है

लगातार कुछ दिनों तक श्रीराम मिश्रजी यामुनाचार्य के भवन पर भगवद्गीता के रहस्य को श्रीवैष्णव संप्रदाय के अनुसार पढाया।

भगवद्गीता का पाठ समाप्त होने के पहले ही यामुनाचार्य मन-ही-मन में निश्चिंत ही एक निर्णय पर आते हैं। मेरे जीवन का परमार्थ राजनीति में नहीं होगा। ऐसा समझकर, अपने दादा-परदादाओं के मार्ग पर चलने का छोडकर मैं इस प्रकार की राजनीति के जाल में फंसकर मुश्किल में पड गया, ऐसा लग रहा है। अब मुझे श्रीराम मिश्र के बिना (सिवाय) दूसरा कोई सहारा नहीं है; ऐसा समझकर उसके चरणों को अभिनन्दन करके, इस प्रकार कहता है यामुनाचार्यजी।

''स्वामी! मेरा कर्तव्य क्या है इसे मैं अभी अभी समझ रहा हूँ। पहले हमारे दादा-पर-दादाओं ने जो धन छुपाकर आपको दिया था, वह बडा धन कहाँ है बताइए। उसके बाद मेरे जीवन के मार्ग को ठीक से बदलूँगा।

''बेटा! मैं इस शुभ अवसर के लिए तो ना! इंतजार कर रहा था! उस वंशज के धन को तुम्हें सौंप दूँगा फिर मेरा कर्तव्य समाप्त होगा।

वंशज के धन का दर्शन

उसे दूसरे दिन सुबह श्रीराम मिश्र यामुनाचार्यजी को साथ ले जाकर श्रीरंगा के दिव्य क्षेत्र माने कावेरी नदी के किनारे सप्त प्राकार के आगे मंदिर में आदि शेषु के ऊपर सोया हुआ श्रीरंगनाथ स्वामी के चरणों को दिखाते हुए इस प्रकार कहता है।

''बेटा! ठीक से देखना। वह देख! ये चरण कमल ही तुम्हारे दादा-पर-दादाओं द्वारा छुपाकर रखा गया वंशज का धन है। उसे सावधानी से बचाने की जिम्मेदारी तुम्हारी है। इससे मेरा कर्तव्य पूरा हुआ, तुम्हारे

दादाजी नाथमुनि द्वारा देखे गये सपने साकार होने का समय आ गया है चलता हूँ।'' श्रीराम मिश्रजी छुट्टी लेकर अपना रास्ता पकडकर चल जाता है। उस प्राचीन काल में ही पंचभूतों के शरीर को छोडकर, श्रीरंगनाथ के चरणकमल तक पहुँच गये।

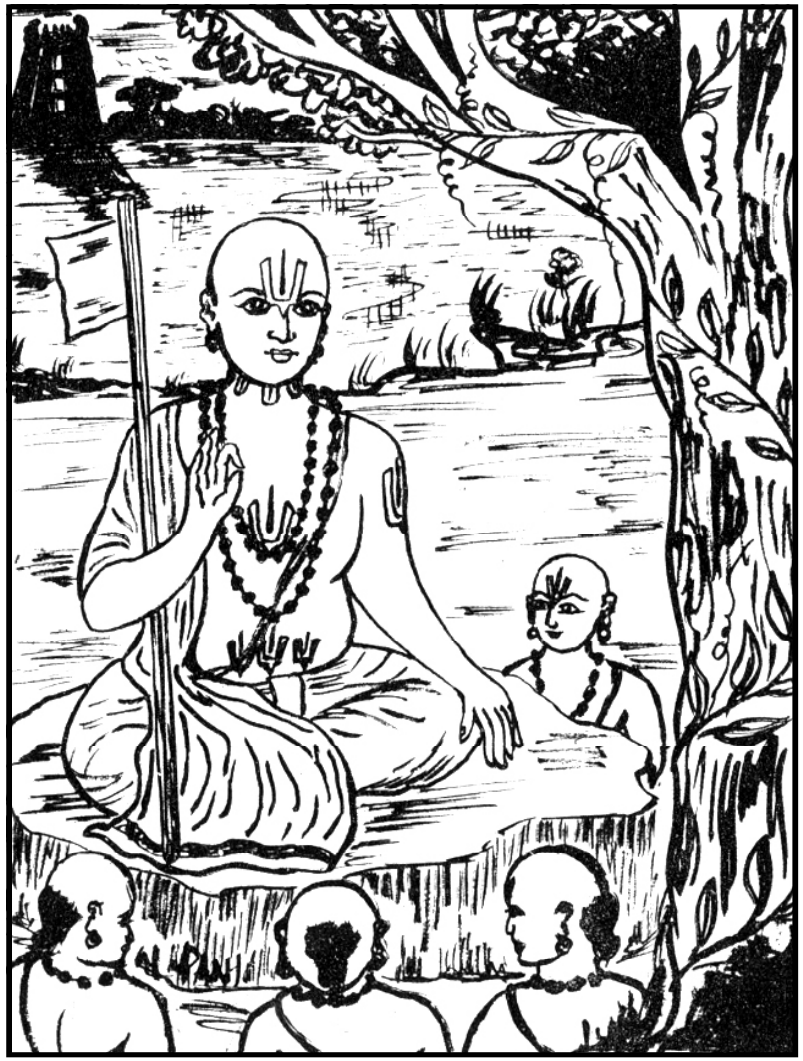

सन्यास को स्वीकार करना

यामुनाचार्यजी के मन में संपूर्ण वैराग्य भर गया था। अपने दादा-पर-दादाओं द्वारा बताये मार्ग पर चलकर श्रीवैष्णव संप्रदाय को पुनः स्थापित करने के लिए दृढ निश्चय कर लेता है। अज्ञान के अंधकार में डूबे हुए हमें प्रकाश में लाने वाला श्रीराम मिश्रजी को मन ही मन में धन्यवाद देता है। अब तक मैं ने जो अनुभव किया था वह संसारिक सुख था। राज्य भोग आगे अपनाने से व्यर्थ ही होगा। ऐसा समझता है। जो बचा हुआ जीवन है उसे धर्म की स्थापना के लिए, भगवत सेवा के लिए गुजारना होगा। इस प्रकार की प्रतिज्ञा करता है। अपने राज्य को अपने वारिस के हवाले करके सन्यास आश्रम को स्वीकार किया। श्रीरंग क्षेत्र में श्रीरंगनाथ स्वामी मंदिर के सामने एक आश्रम का निर्माण किया। उस काल से ही यामुनाचार्य की प्रशंसा, प्रतिष्ठा सारे देश में फैल गई। उनके प्रवचनों को सुनने के लिए उसे शिष्य बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ी। कई लोग उनके शिष्य बनने के लिए उनका आश्रय लिए। श्रीवैष्णव धर्म के सिद्धांत के मूल स्तंभों को जितने चाहे उतने ग्रंथों की उन्होंने संस्कृत भाषा में रचनाकर महा उपकार किया है।

''यामुनाचार्य'' ऐसा नाम आया। अन्य धर्म के लोगों से चर्चा करके उन सभी को अपने धर्म की ओर लाया।

ग्रंथों की रचनाएँ

वैष्णव संप्रदाय को एकीकृत करने के लिए, आनेवाली पीढियों के लिए लाभ पहुँचाने वाली ग्रंथों की रचना की है। ऐसा पहले ही बताया गया है। उनमें आजकल उपलब्ध होने वाली ग्रंथों में से प्रमुख हैं - 1) श्रीस्तुति 2) स्तोत्ररत्नम् 3) गीतार्थसंग्रह 4) आगमप्रमाण्यम् 5) सिद्धित्रयं,

इसके अतिरिक्त ''पुरुष निर्णय'' जैसे ग्रंथों की भी उन्होंने रचना की है। लेकिन अभी ये ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। ये सभी ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखी गयी हैं। उनकी शैली का प्रौढत्व गंभीर होता है। आगे इन ग्रंथों के सभी विषयों को लेकर परिचय दिया जा रहा है।

स्तुतियाँ

1. श्रीस्तुति

ये उनकी सभी रचनाओं में से छोटी है। इनमें केवल चार श्लोक मात्र होने पर इसे ''चतुश्लोकि'' ऐसा और एक नाम दिया गया है। ''कांतस्ते पुरुषोत्तम'' जैसे शब्द से आरंभ हुआ इसलिए इसे ''कांतास्तोत्रम्'' कहा जाता है। इन स्तोत्रों में श्रीमन्नारायण की धर्मपत्नी श्रीदेवी के वैभव का बहुत ही अच्छा वर्णन हुआ है। लोगों की सृष्टि को, स्थिति को, संहार को, मोक्ष को, अपने पति के साथ वह महिला भी कारण थी। इस प्रकार इस स्तोत्र का तात्पर्य है।

2. स्तोत्ररत्नम्

इसमें श्रीमन्नारायण के बारे में 65 श्लोकों से भरा ग्रंथ है। इसमें यामुनाचार्य की कविताओं की नैपुण्यता स्पष्ट होती है। भगवान तक पहुँचने में प्राणियों के कष्ट, यातनाएँ, अंत में सभी प्रयत्नों को छोडकर, ''आप ही सब कुछ है और दूसरा कोई नहीं है'' कहते हुए वे प्राणियों द्वारा किये जाने वाले शरणागत (इसी को भी कहते है); शरणागत की पद्धति में रहने वाली विशिष्टता, आदि अंशों को यामुनाचार्य ने बहुत अच्छी सोच के साथ विवरण दिया है। वैकुण्ठ लोक में श्रीमन्नारायण का वैभव, उनकी पत्नी जो लक्ष्मी देवी के बडप्पन को, अडोस-पडोस के सेवा करने के लिए आये भगवत भक्तों की भक्ति, परायन में आरंभ

होने वाले विषयों का वर्णन आँखों को मुग्ध किये जैसा वर्णन किया गया है।

सब से पहले, इस स्तोत्र में एक श्लोक को सुनने मात्र से रामानुज जी यामुनाचार्य की विशिष्टता को पहचानकर, उसे मिलने के लिए प्रयत्न किया था। ऐसा एक संप्रदाय है। इस स्तोत्र की विशिष्टता को देखने के लिए दो श्लोकों का उदाहरण दिया जा रहा है।

निमज्ञतोऽनंत भवार्णवान्तः
चिराय मे कूलमिवासि लब्धः।
त्वयापि लब्धं भगवन्! इदानीम्
अनुत्तमं पात्रमिदं दयायाः।।

अर्थ : हे भगवान! हृदय के बाहर संसार रूपी समुद्र में डुबा हुआ मैं, कई समय के बाद आपकी दर्शन हुई है। आप को भी कई वर्षों के बाद, तुम्हारे आदेश से एक उत्तम पात्र मिला है'' (इसका अर्थ यह है कि आदेश को पाने के लिए मुझसे अधिक अर्हता किसी में भी नहीं है) इस प्रकार इसका भाव है।

निरासकस्यापि न तावदुत्सहे।
महेश! हातुं तव पादपंकजम्।
रुषा निरस्तोऽपि शिशुः स्तनंधयः
न जातु मातुः चरणौ जिहासति।

अर्थ : हे परमात्मा! आप मुझे झिडकी देकर धक्का मारने पर भी आपके चरण कमल को मात्र मैं छोड नहीं पाऊँगा। जिस प्रकार अपनी माँ गुस्से से कितना भी धक्का मार दे दूध पीने वाला छोटा बच्चा माँ के चरण कमल को एक बार भी नहीं छोडता।

3. गीतार्थसंग्रह

इसमें यामुनाचार्य भगवत गीता तत्त्व के संग्रह जैसे 32 श्लोकों में संग्रहित किया है। श्रीरामजी उसे भगवद्गीता के रहस्य को पद कहकर पहले ही बताया गया है उसी उपदेश को लेकर यामुनाचार्य इस ग्रंथ की रचना की है।

इस ग्रंथ को आधार बनाकर, रामानुज ने गीताभाष्य की बहुत अच्छी रचना की है। इस प्रकार बताया गया है हर कोई अपने कर्तव्य को ठीक से निभाते हुए और ठीक से आत्मज्ञान को प्राप्त करके, इह लोक के सुख पर वैराग्य की आदत हो गयी हो तो भगवान के ऊपर अच्छी भक्ति लगेगी। उस भक्ति द्वारा वह भगवान के पास पहुँच सकता है। श्रीमन्नारायण ही भगवान है। इस प्रकार इस ग्रंथ का सारांश है।

4. धर्मग्रंथ

''आगम परमाण्यम्'' जैसी ग्रंथ में यामुनाचार्य ''पांचरात्रं'' वैष्णव शाखा के प्रमाण को निरूपित किया है। इस ''पांचरात्रगम'' में मंदिरों का निर्माण, विग्रह की प्रतिष्ठा, आराधना के नियम आदि ऐसे अनेक विषयों को स्पष्ट बताया गया है। इन आगमों को स्वयं श्रीमन्नारायण उनके भक्त जो थे, रूपियों को, देवताओं को, उपदेश दिया इसलिए इसे प्रमाण के रूप में सभी स्वीकार करे ऐसा एक सिद्धान्त को यामुनाचार्यजी इस ग्रंथ में प्रतिपाद किया है।

5. सिद्धांत ग्रंथ

सिद्धित्रयं ऐसी है कि यामुनाचार्य के सभी ग्रंथों में से उत्तम कहा जा सकता है। क्योंकि श्रीवैष्णव सिद्धांत के प्रमुख ऐसे अनेक विषयों को वे इस ग्रंथ में बहुत ही अच्छे ढ़ंग से चर्चा की है।

इसमें तीन भाग है। प्रथम ''आत्म सिद्ध'' इसमें जीव के लक्षण, स्वरूप स्वभावों, उनके परमात्म के पास पहुँचने के मार्गों को लेकर बताया गया है। द्वितीय भाग का नाम है ईश्वर सिद्धि। इसमें ''परमात्मा कहे जाने वाले है ऐसा निरूपित करने के लिए आवश्यक प्रमाण क्या है?'' जैसे विषयों की चर्चा की गयी है। और तृतीय भाग ''संवित सिद्धि'' में वेदांत के बारे में अन्य धर्म वालों के व्याख्यान उचित नहीं है ऐसा कहते हुए, उसे किस प्रकार समझना है विवरण दिया है यामुनाचार्य जी ने।

इस प्रकार अपने ग्रंथों, रचनाओं द्वारा श्रीवैष्णव धर्म की, सिद्धांत की, अच्छी नींव डालने का श्रेय श्री यामुनाचार्यजी को है।

एक दुर्भाग्य

इस प्रकार यामुनाचार्य श्रीरंग को धर्म प्रचार के लिए प्रमुख केंद्र सा बनाकर अनेक शिष्यों को, पराया शिष्यों को, संप्रदाय के शासन के लिए तैयार किया है। मेरे बाद आचार्य पीठ को रामानुज के लोग ही अधिकार में रहे उसकी अपनी इच्छा को बताने के लिए संकल्प किया था। तभी उनकी तबियत बिगड जाती है। रामानुज भी, यामुनाचार्य जीवित होते समय एक बार मिलना है कहकर जल्द-से-जल्द कांचीपुर से श्रीरंग गये थे लेकिन, दुर्भाग्यवश यामुनाचार्य के जीवित होते समय उसे मिल नहीं पाये। रामानुज के आने के कुछ समय पहले ही यामुनाचार्य स्वर्गवास हो गये। जब ई.सं. 1038 वा वर्ष तब यामुनाचार्य की उम्र 120 वर्ष की थी।

मुडी हुई तीन उंगलियाँ

यामुनाचार्य जीवित होते समय मिल नहीं पाया ''ऐसे दुःख से रामानुज का दिल व्याकुल हो उठता है। निकट आकर यामुनाचार्य की

भौतिक काया को वे नमस्कार करते समय, यामुनाचार्य जी के दाँए हाथ की तीन उँगलियाँ मुडकर थी, जिसे रामानुजाचार्य ने पहचाना। ''ये क्या है! पहले से ही क्या उनकी उँगलियाँ इस प्रकार ही मुडकर थी।'' इस प्रकार वह उपस्थित लोगों से सवाल करता है। इसके पहले ऐसी कभी नहीं थी इस प्रकार लोगों से उत्तर मिलता है। ''तो इसका कारण क्या होगा'' इस प्रकार के विचार रामानुजाचार्य के मन में उभरने लगते हैं।

पूर्ण न होनेवाली लालसाएँ

बहुत ही सोचने के बाद रामानुजाचार्य को इस प्रकार समझ में आता है कि ''शायद उनकी कुछ पूरी न होने वाली इच्छाएँ हो सकती है। यदि मैं उनसे मिला होता तो मुझे उन इच्छाओं के बारे में पता चलता। मैं उनके जीवित होते समय मिल न सका सच में! इसलिए ये मुडी हुई तीन उँगलियाँ उनकी मुझे बतानेवाले तीन अपूर्ण इच्छाओं का संकेत हो सकता है।'' इस प्रकार।

रामानुजाचार्य की प्रतीक्षा

इस प्रकार का भाव अपने मन में आते ही रामानुजाचार्य ने यामुनाचार्य की भौतिक काया को नमस्कार करते हुए, सभी लोगों के सामने इस प्रकार कहता है कि - (1) मैं व्यास महर्षि की रचना ब्रह्मसूत्र को श्रीवैष्णव सिद्धांतपरक व्याख्यानों की रचना करूँगा।

रामानुजाचार्य इस बात को कह ही रहे थे कि यामुनाचार्य की मुडी हुई तीन उँगलियों में से एक उँगली ऊपर उठने लगती है। बडे आनन्द से रामानुजाचार्य फिर से कहता है कि - (2) मैं आलवारों का (तमिल भाषा में भगवान् के बारे में गीतों को रचकर गाने वाले महा भक्तों के) संप्रदाय को बल दूँगा। इस बात को सुनकर यामुनाचार्य की दूसरी उँगली

ऊपर उठती है। चारों ओर घेरे हुए लोगों को एक आश्चर्य था कि तीसरी बार रामानुजाचार्य ने और एक प्रतिज्ञा की। (3) मेरे बाद और एक समर्थवान व्यक्ति को यामुनाचार्य के वारिस के रूप में नियुक्त करूँगा।

तुरंत ही तीसरी उँगली भी उठने लगी। उनकी उस प्रकार की, की गयी प्रतिज्ञा को यामुनाचार्य की आत्मा को शांति मिली। ब्रह्मसूत्रों को ''श्रीभाष्यम्'' जैसे अच्छे व्याख्यानों की रचना की, अपने शिष्यों द्वारा आलवारों के प्रबंध के व्याख्यान को लिखवाया। ''पराशरभट्टर'' नामक एक समर्थवान युवक को वारिस के रूप में नियुक्ति की गयी। श्री यामुनाचार्य ने उन्हें अप्रत्यक्ष रूप में किए गये उपकारों को स्मरण करते हुए रामानुजाचार्य इस श्लोक की रचना की है।

यत्पदांभोरुहध्यानविध्वस्ताशेषकल्मषः ।
वस्तुतामुपयातोऽ हं यामुनेयं नमामि तम् ।।

''किसी महान पुरुष के चरण कमल के बारे में ध्यान करने के समान मेरे अंदर जो पाप है सभी समाप्त होकर मैं भी एक व्यक्ति सा उन्हें, या उनके जैसा यामुनाचार्य को नमस्कार कर रहा हूँ। ऐसा ऊपर के श्लोक का भाव है।

इस प्रकार यामुनाचार्य की कथा है, श्रीवैष्णव धर्म के चरित्र में एक प्रमुख भाग के रूप में रह गया है। उनका बचपन, राज्य की प्राप्ति, वैराग्य, आदि ग्रंथों की रचनाएँ आचार्य पद, अनेक लोगों को मार्गदर्शन होना साधारण सा विषय नहीं है। उनके महापुरुषों के लक्षण है। इस लिए यामुनाचार्यजी सभी के लिए, विशेषकर बच्चों के लिए आदर्श हैं।

* * *